|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 14. Mai 2023 | | |
| **6. Sonntag der Osterzeit A** | | |
| Erste Lesung: Apg 8,5 – 8.14-17; Zweite Lesung: 1 Petr 3,15-18; Evangelium: Joh 14, 15-21 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 147, 1+2+4 | Herr Jesu Christ, dich zu uns wend |
|  | GL 764 | Send deinen Geist |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 6 | Herr Jesus, du bist unser Friede |
|  | GL 165 | Send uns deines Geistes Kraft |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 706 | Wir beten an |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 66, 1-7.16 u. 20 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 643, 3 | Jubelt dem Herrn, alle Lande |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 329, 3-5 | Wir sind getauft auf Christi Tod |
|  |  | |
| Halleluja-Lied: | GL 483, 4 | Liebet einander |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Wer mich liebt, hält fest an meinem Wort.* | |
|  | *Mein Vater wird ihn lieben,* | |
|  | *und wir werden bei ihm wohnen.* | |
|  |  |  |
| Credo: | GL 759 | Der Glaube ist nun fest verbürgt |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 325, 1-3! | Bleibe bei uns |
|  | GL 445 | Ubi caritas + Priester: „Gepriesen ...“ |
|  |  |  |
| Sanctus | GL 708 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 762 | Verklärter Leib |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 348, 2+4+5 | Du heller Schein |
|  | GL 474, 4+5 | Wenn wir die Liebe leben |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 754, 1+4 | Halleluja, lasst uns singen |
|  | GL 389, 3!-5 | Dass du mich einstimmen lässt |
|  | oder ein Marienlied |  |